सिलसिल-ए-फ़ज़ाइल अमीरुल मो'मिनीन
अली इब्न अबी तालीब عليه السلام (आयत नं.1)
आयत-ए-विलायत
انما وليكم الله ورسوله والذين آمنوا الذين يقيمون الصلوٰة
ويؤتون الزكوٰة وهم ركعون
(सुरतुल माइदा, आयत नं.55)
मुरत्तब
खुसरो क़ासिम
मुतरजिम (हिन्दी)
डो. शहेज़ादहुसैन काज़ी

सिलसिला-ए-फ़ज़ाइल-ए-अमीरुल मो'मिनीन
अली इब्ने अबी तालिब عليه السلام

आयत-ए-विलायत

انما وليكم الله ورسوله والذين آمنوا الذين يقيمون الصلوٰة

ويؤتون الزكوٰة وهم رٰكعون

(سورۂ مائدہ، آیت نمبر:۵۵)

(सूरतुल-माइदा, आयत नंबर 55)

मुरत्तब

ख़ुसरो क़ासिम

मुतरजिम (हिन्दी)

डॉ. शहज़ादहुसैन क़ाज़ी

नाम : सिलसिला-ए-फ़ज़ाइल-ए-अमीरुल मो'मिनीन अली इब्ने अबी तालिब عليه السلام

आयत-ए-विलायत

मुरत्तब : ख़ुसरो क़ासिम

अंसिस्टेंट प्रोफेसर

मिकेनिकल इंजीनियरिंग डिपार्टमेंट

अलीगढ़ मुस्लिम युनिवर्सिटी, अलीगढ़

उत्तरप्रदेश, भारत

हिन्दी मुतरजिम : डॉ. शहज़ादहुसैन क़ाज़ी

फाउन्डर एन्ड चेरमेन

ईमाम जा'फ़र सादीक़ फाउन्डेशन

(अहले सुन्नह),

मोडासा, अरवल्ली, गुजरात, भारत

सन-ए-इशाअत : 2015 (हिन्दी तर्जमा-2018)

हदिया : रु. 30/-

कम्पोसिंग एण्ड प्रिंटिंग : ईमाम जा'फ़र सादीक़ फाउन्डेशन (अहले सुन्नह), मोडासा, अरवल्ली (गुजरात)

मिलने का पता

ईमाम जा'फ़र सादीक़ फाउन्डेशन (अहले सुन्नह)

मोडासा, अरवल्ली (गुजरात)

अर्ज़-ए-नाशिरः

सैयदना अली ﷺ फ़ज़ाइल में बहुत सारी आयात-ए-क़ुरआनी वारिद हैं। यहाँ तक कि उलमा कि इस मौज़ूअ पर मुस्तक़िल तसानीफ़ भी हैं। जैसे "मा नज़्ज़लुल क़ुरआन फ़ी अली ﷺ : इब्न मरदविया ﷺ", "मा नज़्ज़लुल क़ुरआन फ़ी अली ﷺ : हाफ़िज़ अबू नईम अस्फ़हानी ﷺ", "शवाहिदुल तंज़ील: हाफ़िज़ हस्कानि हनफ़ी ﷺ" वग़ैरह।

आजकल नासबियत के असर कि वजह से बहुत से लोगों ने यह कहना शुरू कर दिया है कि हज़रत अली ﷺ कि फ़ज़ीलत में क़ुरआन में कुछ नाज़िल नहीं हुआ है। इंशा अल्लाह हम इस सिलसिले को शुरू कर रहे हैं और बारी बारी सैयदना अली ﷺ के फ़ज़ाइल में नाज़िल शुदा आयात का तज़किरा करेंगे।

हज़रत अली ﷺ कि फ़ज़ीलत में एक अहम फ़ज़ीलत सूरा-ए-माइदा की आयत नंबर **55** है, जो **"आयत-ए-विलायत"** के नाम से मशहूर है। इस मुख़्तसर किताबचे में हमने मुख़्तलिफ़ तफ़ासीर से यह साबित किया है कि यह आयत सैयदना अली ﷺ कि फ़ज़ीलत में नाज़िल हुई है।

अल्लाह ﷻ! मेरी इस काविश को कुबूल फरमा ले और रोज़-ए-महशर मेरा शुमार मुहिब्बान-ए-रसूल ﷺ और आल-ए-रसूल ﷺ में फ़रमाए।

तालिब-ए-शफ़ाअत-ए-रसूल

ख़ुसरो क़ासिम

असिस्टेंट प्रोफेसर, मिकेनिकल इंजीनियरिंग डिपार्टमेन्ट

अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी, अलीगढ़

अर्ज़े मुतरजिम
(अनुवादक का निवेदन)

अल्लाह ! के नाम से शुरु कि जो बडा महरबान बख़्शनेवाला है, नहीं है कोई मा'बूद सिवा अल्लाह ! के और मुहम्मद अल्लाह ! के रसूल है। अल्लाह ! का शुक्रगुज़ार हूँ कि उसने मुझ से **"आयत-ए-विलायत"** किताब का हिन्दी लिपियांतर करने का काम लिया।

आज हमारी आँखों के सामने एक ऐसा ज़माना गुज़र रहा है कि जिसमे नासबीय्यत और ख़ारजिय्यत उरुज़ पकड़ रही है, बुग्ज़े मौला अली को कुछ फिरका परस्त लोंगों ने ख़ुद के मस्लक का अहम हिस्सा बना दिया है। ऐसे हालात में अलीगढ़ मुस्लिम युनिवर्सिटी के **Mechanical Engineering Department** के **Assistant Professor हज़रत खुसरो क़ासिम साहब** ने जिम्मा उठाया कि ऐसे नासबी, ख़ारजी हमलो का किताबी शक्लो में जवाब दिया जाए। मस्लके अह्ले सुन्नत में मुहब्बत-ए-अहले बैत और मुहब्बत-ए-अली ये शीयत नहीं है, ये राफ़ज़ीयत नहीं है बलकि ये तो अह्ले सुन्नत का 1400 साल से चला आ रहा मजबूत अक़ीदा है, दीन का मजबूत सतून है। ये बात प्रोफेसर ख़ुसरो क़ासिम साहब ने "शान-ए-अह्ले बैत" में सिर्फ 20 (बीस) सालो में 160 से भी ज़्यादा किताबे लिख़कर बता दिया है। प्रोफेसर ख़ुसरो क़ासिम साहब ने इन किताबो में सिर्फ और सिर्फ अह्ले सुन्नत की किताबो के हवाल पेश किये जो मस्लके अह्ले सुन्नत के 1400 साल के मुफस्सिरीन, मुहद्दिसीन, मुअर्रिख़ीन मुहक़्क़ीन का इकट्ठा किया हुआ सरमाया है। 1400 साल के इस समन्दर को एक जगह पर इकट्ठा करने का काम प्रोफेसर ख़ुसरो क़ासिम साहब ने किया हैं. प्रोफेसर साहब ने ख़ुद को अह्ले सुन्नत कहलाने वाले अह्ल-ए-हदीस और अह्ल-ए-देवबन्द मस्लक के उलमा व मुहद्दिसीन की किताबो के हवाले भी पेश किये है - जैसे कि अल्लामा नासिरुद्दीन अलबानी। प्रोफेसर ख़ुसरो क़ासिम साहब को हदीस बयान करने की सनद भी हासिल हैं जो इमाम अली रिज़ा से मिलती है जिसे इस गुलाम ने अपने आँखों से देखी हैं. अल्लाह ! उनके इस काम का बदला अता फरमाए और ब-रोज-ए-कयामत उनको, उनकी नस्लों को ख़ातमुन्नबी रसूलल्लाह के हाथो जाम-ए-कौसर नसीब फरमाये .... आमीन।

इस बीच प्रोफेसर ख़ुसरो क़ासिम साहब से मेरी मुलाकात और उनकी किताबो का हिन्दी, गुजराती ज़बान में तर्जुमा के काम में हौंसला अफज़ाई करने वाले **"ख़तीब-ए-अह्ले बैत मुफ्ती शफ़ीक़ हनफी कादरी साहब (मुम्बई)"** का तहे दिल से शुक्रगुज़ार हूँ और जब भी किताब में किसी अरबी या उर्दू अल्फाज़ के हिन्दी-गुजराती मा'ना में Confuse हुआ हूँ तब तब मेरी मदद पर हर वक्त आमदा रहने वाले **"दीवान मोहसीनशाह (सांसरोद,गुजरात)"** का भी शुक्रगुजार हूँ।

आज के ज़माने में उरुज पर आ रही नासब्बियत और ख़ारजियत को मुंहतोड जवाब देने के लिये ये छोटी सी किताब "आयत-ए-विलायत" उन लोगों के मुंह पर तमाचा हैं जो कहते फिरते है कि सैयदना इमाम अली के लिए कुरआन में कोई आयत नहीं।

अल्लाह ! से दुआ है मेरी इस हक़ीर सी काविश कुबूल फ़रमाए और मुझे रसूलल्लाह व अहल-ए-बैत की शफाअत नसीब फरमाए !

डो. शहेज़ादहुसैन यासीनमीयां काज़ी

اللباب
في علوم الكتاب

تأليف

تحقيق وتعليق

الجزء السابع

دار الكتب العلمية

٣٩٦ سورة المائدة / الآية: ٥٥

﴿إِنَّمَا وَلِيُّكُمُ اللَّهُ وَرَسُولُهُ وَالَّذِينَ آمَنُوا الَّذِينَ يُقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَهُمْ رَاكِعُونَ ﴿٥٥﴾﴾،

قال ابن عباس ـ رضي الله عنهما ـ والسُّدِّيُّ ـ رحمه الله ـ: قوله تعالى: ﴿وَالَّذِينَ آمَنُوا الَّذِينَ يُقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَهُمْ رَاكِعُونَ﴾، أراد به علي بن أبي طالب ـ رضي الله عنه ـ مرّ به سائِلٌ وهو رَاكِعٌ في المَسْجِد فأعطاه خاتمه[٣]

(٣) أخرجه الطبري في «تفسيره» (٤/٦٢٨ ـ ٦٢٩) عن ابن عباس والسدي ومجاهد.
وذكره السيوطي في «الدر المنثور» (٢/٥١٩) عن ابن عباس وزاد نسبته لعبد الرزاق وعبد بن حميد وأبي الشيخ وابن مردويه.
وعزاه أيضاً للخطيب في «المتفق والمفترق» عن ابن عباس.
وأخرجه الطبراني في الأوسط كما في «مجمع الزوائد» (٧/ ٢٠) عن عمار بن ياسر وقال الهيثمي: وفيه من لا أعرفهم.
وأخرجه أبو الشيخ وابن مردويه عن علي كما في «الدر المنثور» (٢/ ٥١٩).
وذكره السيوطي في «الدر» عن سلمة بن كهيل (٢/ ٥٢٠) وعزاه لابن أبي حاتم وأبي الشيخ وابن عساكر بلفظ: تصدق علي بخاتمه وهو راكع.

→ जनाब अली عليه السلام ने मस्जिद में नमाज़ पढ़ते हुए साइल को अता किया तो यह आयत नाज़िल हुई।

النكت والعيون
تفسير الماوردي

تصنيف
أبي الحسن علي بن محمد بن حبيب الماوردي البصري
٣٦٤ - ٤٥٠ هـ

الجزء الثاني

دار الكتب العلمية
بيروت - لبنان

فَضْلُ ٱللَّهِ يُؤْتِيهِ مَن يَشَآءُ وَٱللَّهُ وَٰسِعٌ عَلِيمٌ ﴿٥٤﴾ إِنَّمَا وَلِيُّكُمُ ٱللَّهُ وَرَسُولُهُۥ وَٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ ٱلَّذِينَ يُقِيمُونَ ٱلصَّلَوٰةَ وَيُؤْتُونَ ٱلزَّكَوٰةَ وَهُمْ رَٰكِعُونَ ﴿٥٥﴾ وَمَن يَتَوَلَّ ٱللَّهَ وَرَسُولَهُۥ وَٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ فَإِنَّ حِزْبَ ٱللَّهِ هُمُ ٱلْغَٰلِبُونَ ﴿٥٦﴾

وفي قوله تعالى: ﴿ ٱلَّذِينَ يُقِيمُونَ ٱلصَّلَاةَ وَيُؤْتُونَ ٱلزَّكَاةَ وَهُمْ رَاكِعُونَ ﴾
: أنه علي، تصدق وهو راكع قاله مجاهد.

→ जनाब मुजाहिद رضی اللہ عنہ फ़रमाते हैं कि इस आयत के मिस्दाक सिर्फ़ अली علیہ السلام हैं जिन्होंने हालत-ए-रुकूअ में (अंगूठी) सदक़ा दिया था।

التفسير المبين

ألفه وكتبه:
الفقير إلى عفو ربه
الدكتور/عبدالرحمن بن حسن النفيسة
صاحب
مجلة البحوث الفقهية المعاصرة

المجلد الثالث

وَاسِعٌ عَلِيمٌ ﴿٥٤﴾ إِنَّمَا وَلِيُّكُمُ اللَّهُ وَرَسُولُهُ وَالَّذِينَ ءَامَنُوا الَّذِينَ يُقِيمُونَ الصَّلَوٰةَ وَيُؤْتُونَ الزَّكَوٰةَ وَهُمْ رَاكِعُونَ ﴿٥٥﴾ وَمَن يَتَوَلَّ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَالَّذِينَ ءَامَنُوا فَإِنَّ حِزْبَ اللَّهِ هُمُ الْغَالِبُونَ ﴿٥٦﴾ : إنها نزلت في

علي بن أبي طالب فقد سأل سائل في مسجد رسول الله ﷺ فلم يعطه أحد شيئاً وكان علي قائماً يصلي وفي يمينه خاتم فأشار إلى السائل بيده حتى أخذه

→ यह आयत हज़रत अली رضي الله عنه कि शान में नाज़िल हुई। मस्जिद-ए-नबवी में एक साइल आया और सवाल किया, किसी ने कुछ अता नहीं किया और अली رضي الله عنه उस वक़्त हालात-ए-रुकूअ में थे, आप ने उसे उंगली से इशारा किया तो उस ने आप رضي الله عنه के हाथ से अंगूठी ले ली।

توفيق الرحمن

في دروس القرآن

تأليف

الشيخ فيصل بن عبد العزيز بن فيصل آل مبارك

الجزء الثاني

دار العليان — دار العاصمة

بِقَوْمٍ يُحِبُّهُمْ وَيُحِبُّونَهُۥٓ أَذِلَّةٍ عَلَى ٱلْمُؤْمِنِينَ أَعِزَّةٍ عَلَى ٱلْكَٰفِرِينَ يُجَٰهِدُونَ فِى سَبِيلِ ٱللَّهِ وَلَا يَخَافُونَ لَوْمَةَ لَآئِمٍ ذَٰلِكَ فَضْلُ ٱللَّهِ يُؤْتِيهِ مَن يَشَآءُ وَٱللَّهُ وَٰسِعٌ عَلِيمٌ (٥٤) إِنَّمَا وَلِيُّكُمُ ٱللَّهُ وَرَسُولُهُۥ وَٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ ٱلَّذِينَ يُقِيمُونَ ٱلصَّلَوٰةَ وَيُؤْتُونَ ٱلزَّكَوٰةَ وَهُمْ رَٰكِعُونَ (٥٥) وَمَن يَتَوَلَّ ٱللَّهَ وَرَسُولَهُۥ وَٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ فَإِنَّ حِزْبَ ٱللَّهِ هُمُ ٱلْغَٰلِبُونَ (٥٦)﴾ .

وقوله تعالى: ﴿إنما وليكم الله ورسوله الذين آمنوا يقيمون الصلاة ويؤتون الزكاة وهم راكعون﴾، أي: متخشعون في صلاتهم وزكاتهم. وعن عبد الملك قال: سألت أبا جعفر عن هذه الآية ﴿إنما وليكم الله ورسوله والذين آمنوا الذين يقيمون الصلاة ويؤتون الزكاة وهم راكعون﴾ قلنا: مَن الذين آمنوا؟ قال: الذين آمنوا. قلنا: بلغنا أنها نزلت في عليّ بن أبي طالب. قال: عليٌّ من الذين آمنوا.

→ इमाम मुहम्मद बाक़र رحمه الله से पूछा गया कि “क्या यह आयत अली رضي الله عنه कि शान में नाज़िल हुई ?” तो आप رحمه الله ने फ़रमाया : “अली رضي الله عنه मो’मिनीन में शामिल है।”

١٦١ الحافظ الحسكاني

وقف لعلي بن أبي طالب سائل وهو راكع في صلاة التطوع فنزع خاتمه

﴿إنما وليكم الله ورسوله والذين آمنوا الذين يقيمون الصلاة ويؤتون الزكاة وهم راكعون﴾

→ इमाम-ए-अहल-ए-सुन्नत **इमाम हस्कानी** ने अपनी मशहूर किताब **"शवाहिद तंज़ील"** में बीस से ज़ियादा असनाद इस **"आयत-ए-विलायत"** के बारे में नक़ल कि हैं जो इस बात को तक़वियत दे रही हैं कि यह शान-ए-नुज़ूल **मुतवातिर** और **दुरुस्त** है हम ज़ैल में हर सनद के बारे में बता देते हैं कि वह किस सहाबी पर ख़त्म हो रही है। हमारी इत्तलाआत के मुताबिक़ आज तक इस अज़ीमुश्शान किताब का उर्दू तर्जुमा नहीं हुआ।

हदीस नंबर 216 : अब्दुल्लाह इब्न-ए-अब्बास

हदीस नंबर 217 : अब्दुल्लाह इब्न-ए-अब्बास

हदीस नंबर 218 : अब्दुल्लाह इब्न-ए-अब्बास

हदीस नंबर 219 : अब्दुल्लाह इब्न-ए-अब्बास

हदीस नंबर 220 : अब्दुल्लाह इब्न-ए-अब्बास

हदीस नंबर 221 : अब्दुल्लाह इब्न-ए-अब्बास

हदीस नंबर 222 : अनस बिन मालिक

हदीस नंबर 223 : अनस बिन मालिक

हदीस नंबर 224 : मुहम्मद बिन हनफ़िया

हदीस नंबर 225 : मुहम्मद बिन हनफ़िया

हदीस नंबर 226 : अता बिन साइब

हदीस नंबर 227 : अब्दुल मालिक बिन जरीह

हदीस नंबर 228 : इमाम मुहम्मद बाक़र

हदीस नंबर 229 : इमाम मुहम्मद बाक़र

हदीस नंबर 230 : इमाम मुहम्मद बाक़र

हदीस नंबर 231 : अम्मार बिन यासिर सहाबी

हदीस नंबर 232 : जाबिर इब्न-ए-अब्दुल्लाह अंसारी सहाबी

हदीस नंबर 233 : अमीरुल मो'मिनीन अली इब्ने अबू तालिब

हदीस नंबर 234 : हज़रत मिक़दाद

हदीस नंबर 235 : हज़रत अबू ज़र

हदीस नंबर 236 : अब्दुल्लाह इब्न-ए-अब्बास

हदीस नंबर 237 : अब्दुल्लाह इब्न-ए-अब्बास

हदीस नंबर 238 : अब्दुल्लाह इब्न-ए-अब्बास

हदीस नंबर 239 : अब्दुल्लाह इब्न-ए-अब्बास

हदीस नंबर 240 : अब्दुल्लाह इब्न-ए-अब्बास

हदीस नंबर 241 : अब्दुल्लाह इब्न-ए-अब्बास

हदीस नंबर 242 : अब्दुल्लाह बिन सलाम

कुल असनाद : 27

معارف القرآن

مؤلفہ شیخ التفسیر ... حضرت مولانا محمد ادریس صاحب کاندھلوی

مکتبۃ المعارف

معارف القرآن جلد ۳ — ۵۲۴ — مائدہ ۵

إِنَّمَا وَلِيُّكُمُ اللَّهُ وَرَسُولُهُ وَالَّذِينَ آمَنُوا الَّذِينَ

خبردار تمہارا رفیق وہی اللہ ہے اور اس کا رسول اور ایمان والے جو

يُقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَهُمْ رَاكِعُونَ ٥٥

قائم رہیں نماز پر اور دیتے رہیں زکوٰۃ اور وہ [illegible] ہیں

ہے ابن عباسؓ سے روایت ہے کہ یہ ابوبکرؓ کے بارہ میں نازل ہوئی اور بعض کہتے ہیں کہ حضرت علیؓ کے بارہ میں نازل ہوئی اور بعض کہتے ہیں کہ عبداللہ بن رواحہؓ کے بارہ میں نازل ہوئی اور حق یہ ہے کہ آیت کے الفاظ عام ہیں قیامت تک آنے والے کامل الایمان لوگوں کو شامل ہیں۔

☆ **आयत का तर्जुमा:** ख़बरदार तुम्हारा रफ़ीक़ वही अल्लाह(ﷻ) है और उस का रसूल (ﷺ)और ईमान वाले जो..... क़ायम रहें नमाज़ पर और देते रहें ज़कात और वह नब्वे हैं.....

→ इब्न-ए-अब्बास (रज़ि.) से रिवायत है कि यह अबू बक्र (रज़ि.) के बारे में नाज़िल हुई और बाज़ कहते हैं कि हज़रत अली (रज़ि.) के बारे में नाज़िल हुई और बाज़ कहते हैं कि अब्दुल्लाह बिन रवाहा (रज़ि.) के बारे में नाज़िल हुई और हक़ यह है कि आयत के अल्फ़ाज़ आम हैं कयामत तक आने वाले कामिल उलईमान लोग शामिल हैं।

→ मौलाना ने इस आयत के चार शान-ए-नुजूल ज़िक्र किए हैं, 1) अबू बक्र (रज़ि.), 2) अब्दुल्लाह इब्न-ए-रवाहा (रज़ि.), 3) तमाम मो'मिनीन क़यामत तक और 4) जनाब अमीरुल मो'मिनीन (अलैहिस्सलाम) । बाक़ी तीन पर तो मौलाना साहब को कोई ऐतराज नहीं हुआ मगर शान-ए-नुजूल में हज़रत अली (रज़ि.) का नाम लिखना उन पर गराँ गुज़रा और इस पर मज़ीद के ऐतराजात ओर जड़ दिये। हमारे लिए इतना ही काफी है कि उन्हों ने इस आयत का नुजूल अहज़रस अली (रज़ि.) कि शान में भी तस्लीम किया है।

→ बाक़ी उनके ऐतराजात का जवाब हम इंशा अल्लाह इस हिस्से के मुकम्मल होने पर अलग से एक सिलसिला बनाकर देंगे।

تفسير البغوي
معالم التنزيل
للإمام محيي السنة أبي محمد الحسين بن مسعود البغوي
(المتوفى - ٥١٦هـ)
المجلد الثالث

الجزء السادس — سورة المائدة

إِنَّمَا وَلِيُّكُمُ اللَّهُ وَرَسُولُهُ وَالَّذِينَ آمَنُوا الَّذِينَ يُقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَهُمْ رَاكِعُونَ ۝ وَمَن يَتَوَلَّ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَالَّذِينَ آمَنُوا فَإِنَّ حِزْبَ اللَّهِ هُمُ الْغَالِبُونَ ۝

وقال السدي: قوله: «والذين آمنوا الذين يُقيمون الصلاةَ ويُؤتونَ الزكاةَ وهم راكعون»، أراد به علي بن أبي طالب رضي الله عنه، مرّ به سائل وهو راكع في المسجد فأعطاه خاتمه[1].

→ इमाम सुद्दी (Al- suddi) رحمه الله कहते हैं हज़रत अली عليه السلام ने मस्जिद में नमाज़ पढ़ते हुए साइल को अता किया तो यह आयत नाज़िल हुई।

عن حقائق غوامض التنزيل وعيون الأقاويل في وجوه التأويل

الجزء الثاني

٢٥٨

﴿إِنَّمَا وَلِيُّكُمُ اللَّهُ وَرَسُولُهُ وَالَّذِينَ آمَنُوا الَّذِينَ يُقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَهُمْ رَاكِعُونَ ﴿٥٥﴾﴾

، وإنها نزلت في عليّ كرم الله وجهه حين سأله سائل وهو راكع في صلاته فطرح له

ـ قال الحافظ ابن حجر في «تخريج الكشاف»: رواه ابن أبي حاتم من طريق سلمة بن كهيل قال: تصدق علي بخاتمه وهو راكع فنزلت ﴿إنما وليكم الله ورسوله﴾ ولابن مردويه من رواية سفيان الثوري عن ابن سنان عن الضحاك عن ابن عباس قال: «كان علي قائماً يصلي فمرّ سائل وهو راكع فأعطاه خاتمه فنزلت» وروى الحاكم في علوم الحديث من رواية عيسى بن عبدالله ثنا أبي عن أبيه عن جده . ورواه الطبراني في الأوسط في ترجمة

→ हाफ़िज़ इब्न-ए-हजर رحمه الله फ़रमाते हैं कि अली عليه السلام ने हालत-ए-रुकूअ में अंगुश्तरी साइल को अता कि और इब्न-ए-मरदविया رحمه الله ने इब्न-ए-अब्बास رضي الله عنه से रिवायत की है कि जब हज़रत अमीर رضي الله عنه ने रुकूअ में साइल को अता किया तो यह आयत नाज़िल हुई। इमाम हाकिम رحمه الله ने भी इस को रिवायत किया है और इमाम तबरानी رحمه الله ने भी अपनी किताब औसत में इसको लिखा है।

التفسير الكبير
للإمام
الفخر الرازي
الجزء الثاني عشر
الطبعة الثالثة
دار إحياء التراث العربي
بيروت

﴿إِنَّمَا وَلِيُّكُمُ اللَّهُ وَرَسُولُهُ وَالَّذِينَ آمَنُوا الَّذِينَ يُقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَهُمْ رَاكِعُونَ ٥٥﴾ . وروى عن أبي ذر رضي الله عنه أنه قال: صليت مع رسول الله صلى الله عليه وسلم يوما صلاة الظهر، فسأل سائل في المسجد فلم يعطه أحد، فرفع السائل يده إلى السماء وقال: اللهم اشهد أني سألت في مسجد الرسول صلى الله عليه وسلم فما أعطاني أحد شيئاً، وعلى عليه السلام كان راكعاً، فأومأ اليه بخنصره اليمنى وكان فيها خاتم، فأقبل السائل حتى أخذ الخاتم بمرأى النبي صلى الله عليه وسلم، فقال «اللهم إن أخي موسى سألك فقال (رب اشرح لي صدري) إلى قوله (وأشركه في أمري) فأنزلت قرآنا ناطقا (سنشد عضدك بأخيك ونجعل لكما سلطانا) اللهم وأنا محمد نبيك وصفيك فاشرح لي صدري ويسر لي أمري واجعل لي وزيرا من أهلي عليا اشدد به ظهري. قال أبو ذر: فوالله ما أتم رسول الله هذه الكلمة حتى نزل جبريل فقال: يا محمد اقرأ (إنما وليكم الله ورسوله) الى آخرها، فهذا مجموع ما يتعلق بالروايات في هذه المسألة

→ हज़रत अबू ज़र رضي الله عنه फ़रमाते हैं कि एक दफा हमने रसूलल्लाह صلى الله عليه وآله وسلم के साथ ज़ुहर कि नमाज़ अदा की और एक साइल ने आ कर सवाल किया पर किसी ने कुछ भी न दिया तो साइल ने कहा कि "अल्लाह سبحانه وتعالى ! गवाह रहना कि मस्जिद-ए-नबवी में भी मुझे कुछ नहीं मिला।" उस वक़्त अली رضي الله عنه रुकूअ की हालत में थे, आप رضي الله عنه ने साइल को हालत-ए-रुकूअ में अंगूठी अता की। उस वक़्त रसूलल्लाह صلى الله عليه وآله وسلم ने दुआ की कि "या अल्लाह سبحانه وتعالى ! हज़रत मूसा عليه السلام ने जैसी दुआ हज़रत हारून عليه السلام के लिए की थी वैसी दुआ मैं अली عليه السلام के लिए करता हूँ।"

→ हज़रत अबू ज़र رضي الله عنه फ़रमाते हैं कि वल्लाह उसी वक़्त हज़रत जिबरईल عليه السلام नाज़िल हुए और आयत " انما وليكم الله " नाज़िल हुई। यहाँ से एक बात और भी साबित है कि हज़रत अली عليه السلام की मंज़िलत रसूलल्लाह صلى الله عليه وآله وسلم के लिए सिर्फ़ तबूक तक महदूद नहीं थी बल्कि आप رضي الله عنه सारी ज़िंदगी हारून-ए-मुहम्मद صلى الله عليه وآله وسلم बन कर रहे।

الجزء الثالث

تفسير البحر المحيط

﴿إنما وليكم الله ورسوله﴾

قاله الحسن. وسئل الباقر عمن نزلت فيه هذه الآية، أهو علي؟ فقال: علي من المؤمنين. وقيل: الذين آمنوا هو علي، رواه أبو صالح عن ابن عباس،
وروي أن علياً رضي الله عنه تصدق بخاتمه وهو راكع في الصلاة.

→ इमाम मुहम्मद बाक़र عليه السلام से पूछा गया कि “क्या यह आयत अली عليه السلام की शान में नाज़िल हुई” तो आप عليه السلام ने फ़रमाया कि “अली رضي الله عنه मो’मिनीन में शामिल है।”

→ हज़रत अमीर عليه السلام ने हालत-ए-रुकूअ में साइल को अता किया तो यह आयत नाज़िल हुई।

٤٤٦ سورة المائدة الجزء السادس

إِنَّمَا وَلِيُّكُمُ ٱللَّهُ وَرَسُولُهُۥ وَٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ ٱلَّذِينَ يُقِيمُونَ ٱلصَّلَوٰةَ وَيُؤْتُونَ ٱلزَّكَوٰةَ وَهُمْ رَٰكِعُونَ ﴿٥٥﴾ وَمَن يَتَوَلَّ ٱللَّهَ وَرَسُولَهُۥ

إليه. وإنها نزلت في علي رضي الله عنه حين سأله سائل وهو راكع في صلاته، فطرح له خاتمه[1]، واستدل بها الشيعة على إمامته زاعمين أن المراد بالولي المتولي للأمور والمستحق للتصرف فيها،

→ हज़रत अली عليه السلام ने मस्जिद में नमाज़ पढ़ते हुए साइल को अता किया तो यह आयत नाज़िल हुई और शिया इसी आयत से हज़रत अली عليه السلام की इमामत पर भी इस्तेदलाल करते हैं। उन के यहाँ लफ्ज-ए-वली का मतलब मुतवल्ली अलउमूर और मुस्तहक़ तसर्रुफ़ है।

﴿إِنَّمَا وَلِيُّكُمُ اللَّهُ وَرَسُولُهُ وَالَّذِينَ آمَنُوا الَّذِينَ يُقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَهُمْ رَاكِعُونَ﴾ (٥٥)

ولكن اتَّفق مع ذلك أنَّ عليَّ بنَ أبي طالبٍ (رضي الله عنه) أعطى خاتمَه، وهو راكعٌ[٢]

تفسير الثعالبي

المسمّى

بالجواهر الحسان في تفسير القرآن

للإمام عبد الرحمن بن محمد بن مخلوف أبي زيد الثعالبي المالكي

(٧٨٦-٨٧٥هـ)

حقق أصوله وخرج أحاديثه وعلق عليه

الشيخ علي محمد معوض

والشيخ عادل أحمد عبد الموجود

شارك في تحقيقه

الأستاذ الدكتور عبد الفتاح أبو سنة

الجزء الأول

دار إحياء التراث العربي — مؤسسة التاريخ العربي

بيروت - لبنان

→ सब इस बात पर मुत्तफ़िक़ हैं कि हज़रत अली عليه السلام ने हालत-ए-रुकूअ में अंगूठी अता कि तो यह आयत नाज़िल हुई।

٥٢٩ سورة المائدة : الآيتان ٥٤، ٥٥

تفسير الطبري
جامع البيان عن تأويل آي القرآن
لأبي جعفر محمد بن جرير الطبري
(٢٢٤ - ٣١٠ هـ)

القول في تأويل قوله : ﴿ إِنَّمَا وَلِيُّكُمُ اللَّهُ وَرَسُولُهُ وَالَّذِينَ آمَنُوا الَّذِينَ يُقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَهُمْ رَاكِعُونَ ﴿٥٥﴾ ﴾

حدثنا محمد بن الحسين ، قال : ثنا أحمد بن المفضل ، قال : ثنا أسباط ، عن السدي ، قال : ثم أخبرهم بمن يتولاهم ، فقال : ﴿ إِنَّمَا وَلِيُّكُمُ اللَّهُ وَرَسُولُهُ وَالَّذِينَ آمَنُوا الَّذِينَ يُقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَهُمْ رَاكِعُونَ ﴾ : هؤلاء جميع المؤمنين ، ولكن علي ابن أبي طالب مر به سائل وهو راكع في المسجد فأعطاه خاتمه .

سدی فرماتے ہیں کہ اس میں سارے مومنین شامل ہیں مگر علی جنہوں نے سوالی کو حالت رکوع میں انگوٹھی عطا کی

حدثنا هناد بن السري ، قال : ثنا عبدة ، عن عبد الملك ، عن أبي جعفر ، قال : سألته عن هذه الآية : ﴿ إِنَّمَا وَلِيُّكُمُ اللَّهُ وَرَسُولُهُ وَالَّذِينَ آمَنُوا الَّذِينَ يُقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَهُمْ رَاكِعُونَ ﴾ . قلنا : من الذين آمنوا ؟ قال : الذين آمنوا . قلنا : بلغنا أنها نزلت في علي بن أبي طالب . قال : علي من الذين آمنوا .

امام محمد باقر سے پوچھا گیا کہ کیا یہ آیت علی کی شان میں نازل ہوئی تو آپ نے فرمایا کہ علی مومنین میں شامل ہے۔

حدثنا إسماعيل بن إسرائيل الرملي ، قال : ثنا أيوب بن سويد ، قال : ثنا عتبة بن أبي حكيم في هذه الآية : قال : علي بن أبي طالب .

عتبہ فرماتے ہیں کہ یہ آیت جناب علی کی شان میں نازل ہوئی

حدثني الحارث ، قال : ثنا عبد العزيز ، قال : ثنا غالب بن عبيد الله ، قال : سمعت مجاهدا يقول في قوله تعالى ذكره : ﴿ إِنَّمَا وَلِيُّكُمُ اللَّهُ وَرَسُولُهُ ﴾ الآية . قال : نزلت في علي بن أبي طالب ، تصدق وهو راكع .

مجاہد فرماتے ہیں کہ یہ آیت علی کی شان میں نازل ہوئی جب آپ نے رکوع کی حالت میں صدقہ دیا

→ इमाम सुद्दी رحمه الله फ़रमाते हैं कि इस में सारे मो'मिनीन शामिल हैं मगर अली رضي الله عنه जिन्हों ने सवाली को हालत-ए-रुकूअ में अंगूठी अता की ।

→ इमाम मुहम्मद बाक़र عليه السلام से पूछा गया कि "क्या यह आयत अली عليه السلام की शान में नाज़िल हुई" तो आप عليه السلام ने फ़रमाया कि "अली عليه السلام मो'मिनीन में शामिल है।"

→ अतबा फ़रमाते हैं कि यह आयत हज़रत अली رضي الله عنه की शान में नाज़िल हुई।

→ मुजाहिद رضي الله عنه फ़रमाते हैं कि यह आयत अली رضي الله عنه की शान में नाज़िल हुई जब आपने रुकूअ की हालत में सदक़ा दिया।

تفسیر مظہری　　　140　　　جلد سوم

إِنَّمَا وَلِيُّكُمُ اللّٰهُ وَرَسُولُهُ وَالَّذِينَ اٰمَنُوا الَّذِينَ يُقِيمُونَ الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُونَ الزَّكٰوةَ وَهُمْ رٰكِعُونَ ﴿۵۵﴾

" تمہارا مددگار تو صرف اللہ تعالیٰ اور اس کا رسول (پاک) ہے اور ایمان والے ہیں ۱؎ جو صحیح صحیح نماز ادا کرتے ہیں اور زکوٰۃ دیا کرتے ہیں ۲؎ اور (ہر حال میں) وہ بارگاہِ الٰہی میں جھکنے والے ہیں۔ ۳؎ "

تفسیر مظہری

☆ **आयत का तर्जुमा** : "तुम्हारा मददगार तो सिर्फ़ अल्लाह ﷻ ! और उसका रसूल (पाक) ﷺ है और ईमान वाले हैं **(1)** जो सही सही नमाज़ अदा करते हैं और ज़कात दिया करते हैं **(2)** और (हर हाल में) वह बारगाह-ए-इलाही में झुकने वाले हैं। **(3)**"

→ "तबरानी" में औसत में ऐसी सनद से रिवायत की है जिस में मजहूल **(Unknow)** रावी हैं और वह अम्मार बिन यासिर से रिवायत करते हैं कि हज़रत अली शेर-ए-ख़ुदा رضی اللہ عنہ के पास एक साइल आया, जबकि आप رضی اللہ عنہ नवाफ़िल पढ़ रहे थे और हालत-ए-रुकूअ में थे आप رضی اللہ عنہ ने अपनी अंगूठी उतारी और साइल को दे दी तो यह आयत नाज़िल हुई। इस के कई शवाहिद भी हैं। अब्दुल रज़्ज़ाक बिन अब्दुल वह्हाब बिन मुजाहिद رحمہ اللہ ने अपने बाप से, उन्हों ने हज़रत इब्न-ए-अब्बास رضی اللہ عنہ से इस आयत के बारे में ज़िक्र किया है कि आप (इब्ने अब्बास رضی اللہ عنہ) ने फरमाया कि यह आयत शेर-ए-ख़ुदा हज़रत अली رضی اللہ عنہ के बारे में नाज़िल हुई। इब्न-ए-मरदविया رحمہ اللہ ने एक और सनद से हज़रत इब्न-ए-अब्बास رضی اللہ عنہ से इसकी मिस्ल रिवायत नक़ल की है और हज़रत अली शेर-ए-ख़ुदा رضی اللہ عنہ से भी इसकी मिस्ल रिवायत नक़ल की है। इब्न-ए-जरीर ने मुजाहिद رحمہ اللہ और इब्न-ए-अबी हातिम رحمہ اللہ ने सल्लमा बिन कहील से इसी कि मिस्ल रिवायत नक़ल की है। सअलबी رحمہ اللہ ने अबू ज़र رضی اللہ عنہ से और इमाम हाकिम رحمہ اللہ ने अलामुल हदीस में हज़रत अली शेर-ए-ख़ुदा رضی اللہ عنہ से नक़ल किया है। ये वो शवाहिद हैं जिनमें से बाज़ बाज़ को कुव्वत बहम पहुंचाते हैं।

إِنَّمَا وَلِيُّكُمُ اللَّهُ وَرَسُولُهُ وَالَّذِينَ آمَنُوا الَّذِينَ يُقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَهُمْ رَاكِعُونَ ﴿٥٥﴾ وَمَن يَتَوَلَّ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَالَّذِينَ آمَنُوا فَإِنَّ حِزْبَ اللَّهِ هُمُ الْغَالِبُونَ ﴿٥٦﴾

قال: ﴿الَّذِينَ يُقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ﴾ قال ابن عباس: وذلك أن بلالاً لما أذن وخرج رسول الله - صلى الله عليه وسلم - والناس في المسجد يصلون بين قائم وراكع وساجد فإذا هو بمسكين يسأل الناس فدعاه رسول الله - صلى الله عليه وسلم - وقال: هل أعطاك أحد شيئاً؟ قال: نعم قال: ماذا؟ قال: خاتم فضة، قال: ومن أعطاك؟ قال: ذلك المصلي، قال في أي حال أعطاك؟ قال: أعطاني وهو راكع فنظر فإذا هو عليّ بن أبي طالب - رضي الله

تفسير السمرقندي
المسمى
بحر العلوم
لأبي الليث نصر بن محمد بن أحمد بن إبراهيم السمرقندي
المتوفى سنة ٣٧٥ هـ

تحقيق وتعليق
الشيخ علي محمد معوض — الشيخ عادل أحمد عبد الموجود
الدكتور زكريا عبد المجيد النوتي

→ इब्न-ए-अब्बास رضی اللہ عنہ फ़रमाते हैं कि एक दिन हज़रत बिलाल رضی اللہ عنہ ने अज़ान दी और रसूलल्लाह صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم घर से निकले, नमाज़ के लिए उस वक़्त लोग मस्जिद में रुकूअ ओ सजूद में मसरूफ़ थे, आप صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم ने एक मिस्कीन को मांगते देखा और फ़रमाया कि "किसी ने आपको कुछ दिया," तो उसने कहा कि "जी हाँ।" आप صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم ने फ़रमाया कि "क्या दिया ?" तो उसने कहा कि "अंगूठी।" आप صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم ने फ़रमाया "किस ने?" तो उसने कहा कि "जो आदमी नमाज़ पढ़ रहा है," आप صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم ने फ़रमाया कि "किस हालत में दी ?" तो उसने कहा कि "जब वह रुकूअ में था।" जब आप صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم ने देखा तो वह हज़रत अली बिन अबी तालिब علیہ السلام थे।

الكشف والبيان
المعروف
تفسير الثعلبي

الجزء الرابع

سورة المائدة، الآيات: ٥١ ـ ٥٦ ٧٥

قال ابن عباس، وقال السدي، وعتبة بن حكيم، وثابت بن عبد الله: إنما يعني بقوله ﴿والذين آمنوا الذين يقيمون الصلاة﴾ الآية. علي بن أبي طالب (رضي الله عنه) مرّ به سائل وهو راكع في المسجد وأعطاه خاتمه. أبو ذر الغفاري

أما إني صليت مع رسول الله يوماً من الأيام صلاة الظهر فدخل سائل في المسجد فلم يعطه أحد فرفع السائل يده إلى السماء وقال: اللهم اشهد إني سألت في مسجد رسول الله فلم يعطني أحد

شيئاً وكان علي راكعاً فأومى إليه بخنصره اليمنى وكان يتختم فيها فأقبل السائل حتى أخذ الخاتم من خنصره وذلك بعين النبي ﷺ فلما فرغ النبي ﷺ من الصلاة فرفع رأسه إلى السماء وقال: «اللهم إن أخي موسى سألك، فقال: ﴿ربّ إشرح لي صدري ويسر لي أمري واجعل لي وزيراً من أهلي هارون أخي اشدد به ازري﴾[١] الآية، فأنزلت عليه قرآناً ناطقاً ﴿سنشدّ عضدك بأخيك ونجعل لكما سلطاناً﴾[٢] اللهم وأنا محمد نبيك وصفيك اللهم فاشرح لي صدري ويسر لي أمري واجعل لي وزيراً من أهلي علياً أشدد به ظهري»[٣] [٨٥][٤].

قال أبو ذر: فوالله ما استتم رسول الله الكلمة حتى أنزل عليه جبرئيل من عند الله، فقال: يا محمد إقرأ، فقال: وما أقرأ؟ قال: إقرأ ﴿إنما وليكم الله ورسوله﴾، إلى ﴿راكعون﴾.

جناب عبداللہ ابن عباس فرماتے ہیں کہ ایمان والے جو نماز قائم کرتے ہیں اس سے مراد حضرت علی ابن ابی طالب ہیں کیوں کہ آپ ہی نے سائل کو انگوٹھی عطا کی تھی جبکہ آپ حالت رکوع میں تھے

→ हज़रत अब्दुल्लाह इब्न-ए-अब्बास رضي الله عنه फ़रमाते हैं कि ईमानवाले जो नमाज़ क़ायम करते हैं इससे मुराद हज़रत अली इब्न-ए-अबी तालिब رضي الله عنه हैं क्यूँ कि आप ही ने साइल को अंगूठी अता कि थी जब कि आप हालत-ए-रुकूअ में थे।

→ हज़रत अबू ज़र رضي الله عنه फ़रमाते हैं कि एक दफा हमने रसूलल्लाह صلى الله عليه وآله وسلم के साथ जुहर कि नमाज़ अदा की और एक साइल ने आ कर सवाल किया पर किसीने कुछ भी न दिया तो साइलने कहा कि "अल्लाह سبحانه وتعالى ! गवाह रहना कि मस्जिद-ए-नबवी में भी मुझे कुछ नहीं मिला।" उस वक़्त हज़रत अली رضي الله عنه रुकूअ की हालत में थे, आपने साइल को हालत-ए-रुकूअ में अंगूठी अता की। उस वक़्त रसूलल्लाह صلى الله عليه وآله وسلم ने दुआ की कि "या अल्लाह سبحانه وتعالى ! हज़रत मूसा عليه السلام ने जैसी दुआ हज़रत हारून عليه السلام के लिए की थी वैसी दुआ में अली عليه السلام के करता हूँ। या अल्लाह سبحانه وتعالى ! मैं तेरा नबी हूँ صلى الله عليه وآله وسلم, पस मेरा सीना ख़ोल दे मेरा काम आसान फ़रमा और अली इब्न-ए-अबी तालिब عليه السلام को मेरा वज़ीर बना और उस से मेरी कमर मजबूत कर। हज़रत अबू ज़र رضي الله عنه फ़रमाते हैं कि वल्लाह उसी वक़्त हज़रत जिबरईल عليه السلام नाज़िल हुए और आयत انما وليكم الله नाज़िल हुई।

روح المعاني

في

تفسير القرآن العظيم والسبع المثاني

الجزء السادس

تفسير روح المعاني ١٦٦

، فقال عز وجل: ﴿ إِنَّمَا وَلِيُّكُمُ اللَّهُ وَرَسُولُهُ وَالَّذِينَ آمَنُوا الَّذِينَ يُقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَهُمْ رَاكِعُونَ ٥٥

ومسارعتهم اليه ، وغالب الأخباريين على أنها نزلت في علي كرم الله تعالى وجهه ، فقد أخرج الحاكم وابن مردويه وغيرهما عن ابن عباس رضي الله تعالى عنهما باسناد متصل"

واستدل الشيعة بها على إمامته كرم الله تعالى وجهه ، ووجه الاستدلال بها عندهم أنها بالاجماع أنها نزلت فيه كرم الله تعالى وجهه وكلمة (إنما) تفيد الحصر ، ولفظ الولي بمعنى المتولي للأمور والمستحق للتصرف فيها ،

→ फरमाते हैं कि यह आयत हज़रत अमीरुल मो'मिनीन हज़रत अली عليه السلام कि शान में नाज़िल हुई, इसको इमाम हाकिम رضي الله عنه इब्न-ए-मरदविया رحمه الله और बहुत से दूसरे उलमा ने इब्न-ए-अब्बास رضي الله عنه से मुत्तसील असनाद से रिवायत किया है। मतलब ये **"मुतवातिर अहादीस"** हैं और शिया इसी आयत से हज़रत अली عليه السلام कि इमामत पर भी इस्तेदलाल करते हैं और इसकी वजह यह है कि उनके हाँ बिल इजमाअ् साबित है कि यह आयत जनाब अमीर عليه السلام की शान में नाज़िल हुई और आयत में कलाम "इन्नमा" हसर है और लफ्ज "वली" का मतलब मुतवल्ली अल उमूर और मुस्तहक़ तसर्रुफ़ है।

اللهِ يُؤْتِيهِ مَنْ يَشَاءُ ۚ وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ﴿٥٤﴾ إِنَّمَا وَلِيُّكُمُ اللَّهُ
وَرَسُولُهُ وَالَّذِينَ آمَنُوا الَّذِينَ يُقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ
وَهُمْ رَاكِعُونَ ﴿٥٥﴾ | ولایت کے حقدار لوگ:

☆ **आयत का तर्जुमा** : फज्ल है वह देता है जिसे चाहे, और अल्लाह वुसअत वाला और इल्म वाला है। तुम्हारा वली बस अल्लाह ﷻ और उसका रसूल ﷺ है और वो लोग हैं जो ईमानवाले जो नमाज़ क़ायम करते हैं और ज़कात देते हैं।

☆ **विलायत के हक़दार लोग:.....**

وَالَّذِينَ آمَنُوا الَّذِينَ يُقِيمُونَ الصَّلَاةَ مَحَلًّا:

→ नहला मरफ़ूअ है क्यूँ कि यह 'अल्लज़ीन' से बदल है। 'या हुमुल्लज़ीन' से मरफ़ूअ है या मनसूब है मिदह की वजह से وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ उसकी वाव और وَهُمْ رَاكِعُونَ ﴿٥٥﴾ की वाव हालिया है यानी वो ज़कात अदा करते हैं जबकि वो नमाज़ में रुकूअ की हालत में होते हैं। बाज़ ने कहा कि यह हज़रत अली رضی اللہ عنہ के मुताल्लिक़ उतरी, उनसे एक साइल ने सवाल किया जबकि वह अपनी नमाज़ में हालत-ए-रुकूअ में थे। आपने अपनी अंगूठी उसकी तरफ फेंक दी गोया वो ख़िज़्र के मुताल्लिक़ बेताब थे। पस उन्हों ने उसके उतार ने में अमल कसीर नहीं किया जिस से नमाज़ फ़ासिद हो।

تفسير الخازن
المسمى
لباب التأويل في معاني التنزيل

تأليف
علاء الدين علي بن محمد بن إبراهيم البغدادي
الشهير بالخازن
المتوفى سنة ٧٤١ هـ

ضبطه وصححه
عبد السلام محمد علي شاهين

الجزء الثاني

إِنَّمَا وَلِيُّكُمُ ٱللَّهُ وَرَسُولُهُۥ وَٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ ٱلَّذِينَ يُقِيمُونَ ٱلصَّلَوٰةَ وَيُؤْتُونَ ٱلزَّكَوٰةَ وَهُمْ رَٰكِعُونَ ﴿٥٥﴾ وَمَن يَتَوَلَّ ٱللَّهَ وَرَسُولَهُۥ وَٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ فَإِنَّ حِزْبَ ٱللَّهِ هُمُ ٱلْغَٰلِبُونَ ﴿٥٦﴾

الوجه الثالث: قيل إن هذه الآية نزلت وهم وكوع. وقيل: نزلت في شخص معين وهو علي بن أبي طالب. قال السدي: مر بعلي سائل وهو راكع في المسجد فأعطاه خاتمه، فعلى هذا قال العلماء: العمل القليل في الصلاة لا يفسدها

→ इमाम सुद्दी (Al-suddi) رحمه الله कहते हैं यह आयत हज़रत अली رضي الله عنه की शान में नाज़िल हुई। हज़रत अली عليه السلام ने मस्जिद में नमाज़ पढ़ते हुए साइल को अता किया तो यह आयत नाज़िल हुई और इससे फ़िक़हा यह इस्तेदलाल करते हैं कि ऐसा अमल नमाज़ को बातिल नहीं करता।

فتح القدير

الجامع بين فني الرواية والدراية من علم التفسير

تأليف

محمد بن علي بن محمد الشوكاني

المتوفى سنة ١٢٥٠هـ

حققه وخرج أحاديثه

الدكتور عبد الرحمن عميرة

وضع فهارسه وشارك في التخريج

لجنة التحقيق والبحث العلمي بدار الوفاء

الجزء الثاني

واسع عليم ﴿٥٤﴾ إنما وليكم الله ورسوله والذين آمنوا الذين يقيمون الصلاة ويؤتون الزكاة وهم راكعون ﴿٥٥﴾ ومن يتول الله ورسوله والذين آمنوا فإن حزب الله هم الغالبون ﴿٥٦﴾ ﴾.

الخاتم ؟ قال: ذلك الراكع ، فأنزل الله فيه: ﴿ إنما وليكم الله ورسوله ﴾[8]. وأخرج عبد الرزاق وعبد بن حميد وابن جرير وأبو الشيخ وابن مردويه عن ابن عباس قال : نزلت في علي بن أبي طالب [1] . وأخرج أبو الشيخ وابن مردويه وابن عساكر عن علي بن أبي طالب نحوه . وأخرج ابن مردويه عن عمار نحوه أيضاً . وأخرج الطبراني في الأوسط بسند فيه مجاهيل عنه نحوه .

→ सहाबी-ए-रसूल ﷺ इब्न-ए-अब्बास ؓ फ़रमाते हैं कि यह आयत हज़रत अमीर ؑ की शान में नाज़िल हुई। इसको इब्न-ए-मरदविया ؒ और इब्न-ए-असाकिर ؒ ने रिवायत किया है और इब्न-ए-मरदविया ؒ ने सहाबी-ए-रसूल ﷺ हज़रत अम्मार ؓ से भी यही रिवायत की है की यह अली ؓ कि शान में नाज़िल हुई और इसे तबरानी ؒ ने औसत में अपनी सनद से लिखा है।

الجامع لأحكام القرآن

والمبين لما تضمنه من السنة وآي الفرقان

٥٤ سورة المائدة الآية ٥٥

قوله تعالى: ﴿إِنَّمَا وَلِيُّكُمُ ٱللَّهُ وَرَسُولُهُۥ وَٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ ٱلَّذِينَ يُقِيمُونَ ٱلصَّلَوٰةَ وَيُؤْتُونَ ٱلزَّكَوٰةَ وَهُمْ رَٰكِعُونَ ۝﴾

وقال ابن عباس نزلت في علي ابن أبي طالب ﷺ[٦]. وقاله[٧] مجاهد والسُّدي[٨]

المسألة الثانية: وذلك أنَّ سائلاً سأل في مسجد رسول الله ﷺ، فلم يعطه أحدٌ شيئاً، وكان علي في الصلاة في الركوع، وفي يمينه خاتمٌ، فأشار إلى السائل به حتى أخذه[٩]

→ इब्न-ए-अब्बास رضی اللہ عنہ फरमाते हैं कि यह आयत हज़रत अली رضی اللہ عنہ की शान में नाज़िल हुई, मस्जिद-ए-नबवी में एक साइल आया और सवाल किया, किसी ने कुछ अता नहीं किया और अली رضی اللہ عنہ उस वक़्त हालत-ए-रुकूअ में थे, आपने उसको उंगली से इशारा किया तो उसने आप رضی اللہ عنہ के हाथ से अंगूठी ले ली।

→ इस आयत के मज़ीद शान-ए-नुज़ूल में वह इब्न-ए-अब्बास رضی اللہ عنہ की एक और रिवायत नक़ल करते हैं और लिखते हैं कि

وقال ابن عباس: نزلت في أبي بكر ﷺ

→ यह आयत हज़रत अबू बक्र رضی اللہ عنہ कि शान में उतरी।

→ हज़रत अली رضی اللہ عنہ के लिए तो रुकूअ में अंगूठी देने का ज़िक्र मिलता है मगर हज़रत अबू बक्र رضی اللہ عنہ के लिए ऐसा वाक़या कहीं भी नहीं मिलता। और इसी वजह से इस किताब के मुसन्निफ़ (इमाम कुरतबी رحمہ اللہ) भी अपना फैसला सुना देते हैं और फरमाते हैं:

فالمراد على هذا بالزكاة التصدُّق بالخاتم.

→ मैं (ईमाम कुरतबी رحمہ اللہ) कहता हूँ इस जगह ज़कात का मतलब अंगूठी सदक़ा करना है। मतलब वही अमल जो अली इब्न-ए-अबी तालिब رضی اللہ عنہ ने किया इस तरह अह्ल-ए-सुन्नत के इस जलीलूल क़द्र आलिम ने भी तस्लीम कर लिया कि यह आयत हज़रत अमीरुल मो'मिनीन अली علیہ السلام की शान में नाज़िल हुई।

جامع البيان في تفسير القرآن

تأليف

محمد بن عبد الرحمن بن محمد بن عبد الله

الإيجي الشيرازي الشافعي

ومعه

حاشية

محمد بن عبد الله الغزنوي

الجزء الأول

٤٧٣

إِنَّمَا وَلِيُّكُمُ ٱللَّهُ وَرَسُولُهُۥ وَٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ ٱلَّذِينَ يُقِيمُونَ ٱلصَّلَوٰةَ وَيُؤْتُونَ ٱلزَّكَوٰةَ وَهُمْ رَٰكِعُونَ

فإن عليا رضى الله عنه أعطى خاتمة فى ركوعه لسائل

→ हज़रत अली عليه السلام ने मस्जिद में नमाज़ पढ़ते हुए साइल को अता किया तो यह आयत नाज़िल हुई।

فتح البيان
في مقاصد القرآن

تأليف

حققه وقدم له وراجعه
خادم العلم
عبد الله بن ابراهيم الأنصاري

الجزء الثالث

يُؤۡتِيهِ مَن يَشَآءُۚ وَٱللَّهُ وَٰسِعٌ عَلِيمٌ ﴿٥٤﴾ إِنَّمَا وَلِيُّكُمُ ٱللَّهُ وَرَسُولُهُۥ وَٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ ٱلَّذِينَ يُقِيمُونَ ٱلصَّلَوٰةَ وَيُؤۡتُونَ ٱلزَّكَوٰةَ وَهُمۡ رَٰكِعُونَ ﴿٥٥﴾

﴿إنما وليكم الله ورسوله والذين آمنوا الذين يقيمون الصلاة ويؤتون الزكاة وهم راكعون﴾ عن ابن عباس قال: تصدّق عليّ بخاتم وهو راكع فأنزل الله فيه هذه الآية،

→ हज़रत अली عليه السلام ने मस्जिद में नमाज़ पढ़ते हुए साइल को अता किया तो यह आयत नाज़िल हुई।

التسهيل
لعلوم التنزيل

للشيخ الإمام العلامة المفسر
أبي القاسم محمد بن أحمد بن جزي الكلبي
المتوفى سنة ٧٤١ هـ

ضبطه وصححه وخرج آياته
محمد سالم هاشم

الجزء الأول

﴿إِنَّمَا وَلِيُّكُمُ اللَّهُ وَرَسُولُهُ وَالَّذِينَ آمَنُوا الَّذِينَ يُقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَهُمْ رَاكِعُونَ ﴿٥٥﴾﴾

إنما أولياؤكم لم يكن في الكلام أصل وتبع ﴿وَهُمْ رَاكِعُونَ﴾ قيل: نزلت في علي بن أبي طالب رضي الله عنه فإنه سأله سائل وهو راكع في الصلاة، فأعطاه خاتمه،

→ हज़रत अमीर عليه السلام ने हालत-ए-रुकूअ साइल को अता किया तो यह आयत नाज़िल हुई।

٦٤٣

وَاللَّهُ وَٰسِعٌ عَلِيمٌ ﴿٥٤﴾ إِنَّمَا وَلِيُّكُمُ اللَّهُ وَرَسُولُهُۥ وَالَّذِينَ ءَامَنُوا الَّذِينَ يُقِيمُونَ الصَّلَوٰةَ وَيُؤْتُونَ الزَّكَوٰةَ وَهُمْ رَٰكِعُونَ ﴿٥٥﴾ وَمَن يَتَوَلَّ اللَّهَ وَرَسُولَهُۥ وَالَّذِينَ ءَامَنُوا فَإِنَّ حِزْبَ اللَّهِ هُمُ الْغَٰلِبُونَ ﴿٥٦﴾

(٤) يروى أن عليا رضي الله عنه كان يصلي نافلة في المسجد فسأله أحد فرمى إليه بالخاتم وهو يصلي فاستدل الفقهاء بهذا أن العمل اليسير لا يبطل الصلاة.

أيسر التفاسير

لكلام العلي الكبير

وبهامشه نهر الخير على أيسر التفاسير

المجلد الأول

تأليف

أبي بكر جابر الجزائري

الواعظ بالمسجد النبوي الشريف

تأليف

→ हज़रत अली عليه السلام ने मस्जिद में नमाज़ पढ़ते हुए साइल को अता किया तो यह आयत नाज़िल हुई और इससे फ़िक़हा यह इस्तेदलाल करते हैं कि ऐसा अमल नमाज़ को बातिल नहीं करता।

تفسیر در منثور مترجم

ضیاء القرآن پبلی کیشنز

إِنَّمَا وَلِيُّكُمُ اللَّهُ وَرَسُولُهُ وَالَّذِينَ آمَنُوا الَّذِينَ يُقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَهُمْ رَاكِعُونَ

☆ **तर्जुमा-ए-आयत** : "तुम्हारा मददगार तो सिर्फ़ अल्लाह سبحانه وتعالى और उसका रसूल (पाक) ﷺ है और ईमानवाले हैं जो सही सही नमाज़ अदा करते हैं और ज़कात दिया करते हैं और (हर हाल में) वह बारगाह-ए-इलाही में झुकने वाले हैं।"

→ इमाम ख़तीब رحمه الله ने मुत्तफ़िक़ हज़रत इब्न-ए-अब्बास رضي الله عنه से रिवायत नक़ल की है कि हज़रत अली शेरे ख़ुदा رضي الله عنه ने अपनी अंगूठी सदका की जबकि आप رضي الله عنه रुकूअ की हालत में थे। नबी-ए-करीम ﷺ ने साइल से पूछा "तुझे यह अंगूठी किसने दी?" उसने अर्ज़ की "इस रुकूअ करने वालेने" तो अल्लाह سبحانه وتعالى ने यह आयत नाज़िल फरमाई।

→ इमाम अब्दुल रज़्ज़ाक अलजमद बिन हमीद رحمه الله, इब्न-ए-जरीर رحمه الله अबुल शेख़ और इब्न-ए-मरदविया ने हज़रत इब्न-ए-अब्बास رضي الله عنه से यह रिवायत नक़ल की है कि यह आयत हज़रत अली बिन अबी तालिब رضي الله عنه के हक में नाज़िल हुई।

→ इमाम तबरानी رحمه الله ने औसत मैं और इब्न-ए-मरदविया رحمه الله ने हज़रत अम्मार बिन यासिर رضي الله عنه से रिवायत नक़ल कि है कि हज़रत अली शेरे ख़ुदा رضي الله عنه के पास साइल आ कर खड़ा हो गया जबकि आप नफ़ली नमाज़ पढ़ रहे थे। हज़रत अली رضي الله عنه ने अंगूठी उतारी और साइल को दे दी। वह साइल हुज़ूर ﷺ कि ख़िदमत में हाज़िर हुआ और सब वाक़या बयान किया तो नबी-ए-करीम ﷺ पर यह आयत नाज़िल हुई।

→ रसूलअल्लाह ﷺ ने यह आयत अपने सहाबा पर पढ़ी फिर कहा : "ज़िसका मैं दोस्त हूं अली رضي الله عنه उसका दोस्त है, ए अल्लाह उसका दोस्त बन जो हज़रत अली رضي الله عنه का दोस्त बने और जो अली رضي الله عنه से दुश्मनी रखे उसे अपना दुश्मन रख।

→ इस वाक़या से यह भी साबित हो जाता है कि रसूल-ए-करीम ﷺ ने हज़रत अली رضي الله عنه के लिए हदीस "मन कुन्तो मौला फ़ हाज़ा अली मौला।", ग़दीर के अलावा और भी मौको पर इरशाद फरमाई जिनमें से एक यह **"आयत-ए-विलायत"** के नुज़ूल का वाक़या भी है।

تفسير النسفي

المسمى

بمدارك التنزيل وحقائق التأويل

تأليف

الإمام الجليل

أبي البركات عبد الله بن أحمد بن محمود النسفي

٢٨٥

﴿إنما وليكم الله ورسوله والذين آمنوا الذين يقيمون الصلاة ويؤتون الزكاة وهم راكعون﴾

إنها نزلت في علي - رضي الله عنه

- حين سأله سائل وهو راكع في صلاته فطرح له خاتمه

→ हज़रत अमीरुल मो'मिनीन عليه السلام ने नमाज़ पढ़ते हुए रुकूअ की हालत में एक फ़क़ीर को अंगूठी अता की तो यह आयत आप عليه السلام की शान में नाज़िल हुई।